ISSN No: 2249-6661 (Print)

SAMBODHI

A Quarterly Peer Reviewed, Refereed Research Journal
Volume: 43, Number: 4 (October-December) Year: 2020
UGC Care Listed Journal

L.D. INSTITUTE OF INDOLOGY

Sambodhi Journal

ISSN No: 2249-6661 UGC Care Listed Journal

Volume: 43, No.4 (J) October-December 2020

Editor-in-Chief

Dr. J.B Shah

UGC Care Approved International Indexed and Referred Journal

IMPACT FACTOR: 5.80

Published By: Lalbhai Dalpatbhai Institute of Indology

CONTENTS

मीमांसा दर्शन में 'कर्म–प्रतिष्ठापन' की समीक्षा
डॉ0 अंजना कुमारी 1

रैशडल की उपयोगितावादी दृष्टि
कुमारी रीना रेणु 3

UNEMPLOYMENT, RACIST REJECTION AND POVERTY OF NATIVE INDIAN IN GEORGE RYGA'S *THE ECSTASY OF RITA JOE*
Dhivya S 7

EDUCATION THROUGH ONLINE CLASSES: NEED OF THE HOUR
Dr. Anil Kumar Teotia 10

DETERMINATION OF PHYSICOCHEMICAL PROPERTIES OF WATER SAMPLES OF EAST COAST OF NAGAPATTINAM DISTRICT, TAMILNADU
N.Priya, G.Venkatesan 14

ROLE OF COLORS IN EVOKING EMOTIONS: A REVIEW BASED STUDY
Dr. Muzafar Hussain Kawa 20

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के विकास पर ध्यान एवं श्रीमद्भगवद्गीता अध्ययन का प्रभाव : एक अध्ययन
डॉ. रंजीता बैद 22

A STUDY OF MGNREGA ON WOMEN EMPOWERMENT
Ms. Manju Songara 27

IS CASTE –BASED DISCRIMINATION DWINDLING? : A STUDY BASED ON *The Basfore Community Of Golaghat Town*
Mushabbiha Farhin 35

THE GENDERED WAY OF POVERTY: AN INTRODUCTION TO THE INTER-RELATION BETWEEN GENDER AND POVERTY
Mushabbiha Farhin 37

"भारतीय अर्थव्यवस्था में बहुराष्ट्रीय निगमों की भूमिका"
डॉ. आलोक कुमार 39

THE STUDY OF THE PHYSICOCHEMICAL AND BIOLOGICAL PARAMETERS AND ITS IMPLICATIONS ON THE WATER QUALITY OF RIVER SONE, WESTERN BIHAR
Vinod Kumar Singh 43

RESILIENCE AMONG WORKING AND NON-WORKING MOTHERS
Nida Khan 48

नौटंकी में लोकपरम्परा और मिथक
डॉ. नामदेव 51

AN EMPIRICAL STUDY ON EMPLOYER BRANDING IN SELECT SECTORS OF THE SERVICE INDUSTRY
Akanksha Kumari, Dr. Shweta Kastiya 58

Sambodhi
(UGC Care Journal)
Vol-43, No.-4, (J) October-December (2020)
ISSN: 2249-6661

नौटंकी में लोकपरम्परा और मिथक

डॉ. नामदेव

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

लोक–नाट्य से तात्पर्य

लोक नाट्य का तात्पर्य नाटक के उस रूप से है जिसका संबंध अभिजात वर्ग से न होकर साधारण जन–जीवन से होता है। इसलिए इसमें जनता के जीवन के सभी पहलुओं का स्वाभाविक सजीव एवं आस्थापूर्ण चित्रण सहजता से होता है। डॉ. दशरथ ओझा के शब्दों में "पठित समाज के सदृश अपठित तथा अर्द्धपठित समाज में भी प्रतिभाशाली व्यक्ति रहते हैं, जो अपने समुदाय के अनुरूप जन–काव्य और जन–नाटक का सृजन करते रहते हैं। उनकी रचना द्वारा लक्ष–लक्ष ग्रामीण जनता दृश्य काव्य तथा श्रव्य काव्य का रसास्वादन करती है।"[1]

लोक नाटकों पर विचार करते हुए डॉ. डी.बी. राय लिखते हैं– "लोकनाटक सामूहिक जरूरतों और प्रेरणाओं से उत्पन्न होने के साथ–साथ लोक–विश्वास, लोक रूढ़ियों और लोक तथ्यों को अपने ऊपर समेटकर चलता है। यह लोकजीवन का प्रतिनिधित्व करते हुए अपने क्षेत्र के लोकजीवन को प्रभावित करता, झिझोड़ता और आनंदित करता है। यह लोक रंग शैली द्वारा लोक स्थल में खेला जाता है। यह लिखित भी हो सकता है, अलिखित भी। लोक स्थल, भाव मंजरीस्थल, तीर कमान जैसा स्थल टीला स्थल या खुला स्थल है"[2]

लोकनाट्य अपने मूल रूप में लोकमानस की आदिम अकृत्रिम एवं सहज नृत्य गीतात्मक तथा अभिनयात्मक अभिव्यक्ति का नाम है।

लोक नाट्य का स्वरूप

लोक नाट्य पारम्परिक, परस्पराशील लोकधर्मी नाट्य, जननाट्य, क्षेत्रीय या प्रादेशिक, ग्रामीण नाट्य अथवा आँचलिक नाट्य आदि कई नामों से जाना जाता है। कभी–कभी तो लोकगाथा और लोकनृत्य को भी लोकनाट्य से जोड़ दिया जाता है। लोकनाट्य सामाजिक पद है, जिसके सामान्यतः दो अर्थ निकाले जा सकते हैं– लोक नाट्य और लोक के लिए नाट्य। इस संदर्भ में दो शब्द विवेच्य हैं– 'लोक' और नाट्य। 'लोक' शब्द की व्याख्या में समय–समय पर परिवर्तन होता गया है। इस संदर्भ में इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि "लोक किसी भी राष्ट्र का जन समुदाय है, वह नगर गाँव कहीं भी रह सकता है यदि उसकी कला वर्षों में पारम्परित और अनुभवजन्य है तथा मौखिक परम्परा में है।"[3] नाट्य पुरुषवाचक संस्कृत का शब्द है। वर्तमान समाज में थियेटर नाट्य का पर्याय माना जाता है। आज नाटक सिर्फ दृश्य रह गया है। श्रव्य परम्परा का औचित्य समाप्त होता जा रहा है। 'नाट्य' कला समुच्चय है, इसमें स्थापत्य कला मूर्तिकला, चित्रकला, काव्यकला, संगीतकला और अभिनय – नृत्य कला आदि का संयोग रहता है।

लोकनाट्य कहलाने के लिए निम्नलिखित बातों का होना अनिवार्य है। (1) नाट्य लेख मौखिक परम्परा में तथा लेखक अज्ञात होगा। (2) अभिनेता संवाद या गीत याद नहीं करेंगे बल्कि घटनाओं पर तत्काल आशुरचना करेंगे। (3) मंच व्यवस्था अनौपचारिक होगी, (4) अभिनेता कहीं भी किसी परिस्थिति में अभिनय का प्रदर्शन कर सकेगा। (5) अंचल विशेष के लोकधुनों और नृत्यों का समुचित प्रयोग होगा, (6) परम्पराशीलता का निर्वाह होगा।

लोक नाट्य–परिभाषा

लोक नाट्य की मूल प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए कई समीक्षकों ने विविध परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं। डॉ. करनैल सिंह थिंद के अनुसार "प्रकृति के खुले वायुमण्डल में खेला जानेवाला, परम्परा के अंगों से भरपूर ऐसा नाटक जिसमें लोकप्रिय कथानक को विभिन्न पात्रों द्वारा लोक गीतों और लोकनृत्यों की सहायता से पेश किया जाता है, लोक नाटक है।"[4] डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने इस प्रकार कहा है– "लोकनाटक लोकयान का ऐसा भाग है जिसका संबंध लोकसाहित्य और लोक कला दोनों के साथ है। इसमें गीत, नृत्य और संगीत की त्रिवेणी बहती है।"[5]

कहा जा सकता है कि "नाट्य साहित्य की आत्मा लोक नाट्य है। लोक नाट्य एक प्रकार से गीताभिनय है। इसकी विशेषता लोकधर्मी स्वरूप में निहित है। लोकनाट्य और अभिनय को कोई लिखित रूप नहीं है। लोकजीवन से लोकनाट्य का अभिन्न संबंध है। लोकनाट्य की कहानी का निर्माता अभिनय, दर्शक, श्रोता, पात्र, नर्तक – नर्तकी, वाद्य और वाद्य यंत्र बजानेवाले आदि समाज के ही लोग हैं, क्षेत्रीय भाषा में अभिनीत लोकनाट्य की कथावस्तु ऐतिहासिक, पौराणिक, धार्मिक या सामाजिक होती है। लोकनाट्य के उद्भव और विकास में लोकगीत और लोकनृत्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।"

Copyright © 2020Authors